संपादकीय

बुकर के बहाने.... 'रेत समाधि'

इन दिनों साहित्य में अभिरुचि लेनेवाले लोगों से पूछा जाय कि आजकल क्या चल रहा है या वे क्या पढ़ रहे हैं? तो अमूमन जबाब एक ही मिलेगा... 'रेत समाधि'...! अप्रैल का महीना पुस्तकों की दुनिया में अगर किसी पुस्तक का था तो वह है रेत समाधी का। इंटरनेशनल बुकर पुरस्कार इस वर्ष (2022) गीतांजली श्री के 'रेत समाधि' को प्राप्त हुआ है। यह हर भारतीय के लिए गर्व की बात है। 'डेज़ी रॉकवेल' ने इसका अनुवाद 'Tomb of Sand' के नाम से किया है। इस उपन्यास का कथ्य या कहन एकदम भिन्न है। भाषा का स्वरूप भी अलग है, हिंदी के शब्द इतने रूपों में आए हैं कि मन में प्रश्न उठता है कि क्या इन शब्दों का अंग्रेजी अनुवाद संभव हो सकता है? हाँ.. निश्चित ही हो सकता है। कारण डेज़ी रॉकवेल जी ने यह मुश्किल काम कर दिखाया है। इससे यह बात तो स्पष्ट हो ही जाती है कि विश्व पटल पर अनुवाद का महत्व उजागर हुआ है और साथ ही यह बात भी रेखांकित हो ही जाती है कि हिंदी का साहित्य भी विश्व साहित्य का हिस्सा बनता जा रहा है।

आखिर 'रेत समाधि' में ऐसा क्या है कि जो आंदोलित करता है? हमें पढ़ने के लिए प्रेरित करता है? दरअसल यह उपन्यास ठहरकर पढ़े जाने वाला उपन्यास है जिसकी एक कथा के धागे से कई सारे धागे बंधे हुए हैं। अस्सी साल की एक दादी है जो बिस्तर से उठना नहीं चाहती और जब उठती है तो सब कुछ नया हो जाता है। यहां तक कि दादी भी नयी। वो सरहद को भी निरर्थक बना देती है। अंजुम शर्मा जी ने इसे बहुत ही सटीक शब्दों में यूँ कहा है, "इस उपन्यास में सबकुछ है। स्त्री है, स्त्रियों का मन है, पुरुष है, थर्ड जेंडर है, प्रेम है, नाते हैं, समय है, समय को बांधने वाली छड़ी है, अविभाजित भारत है, विभाजन के बाद की तस्वीर है, जीवन का अंतिम चरण है, उस चरण में अनिच्छा से लेकर इच्छा का संचार है, मनोविज्ञान है, सरहद है, कौवे हैं, हास्य है, बहुत लंबे वाक्य हैं, बहुत छोटे वाक्य हैं, जीवन है, मृत्यु है और विमर्श है जो बहुत गहरा है, तो 'बातों का सच' है।" वास्तव में यह एक अनुठा उपन्यास है। यह अपने आप में एक संपूर्ण कृति है। इसमें मानव जीवन की संपूर्णता को एक अनोखे और अनुठे शिल्प और शैली में गूंथा गया है। जिसे पढ़ने में आत्मिक आनंद मिलता है, परिपक्वता की अनुभति होती है। कहते हैं कि इस उपन्यास का सच जादू जैसा और जादू सच जैसा है। इसलिए इस पुस्तक को रुककर और थमकर पढ़ना है।

गीतांजलि श्री भारत की एक हिंदी उपन्यासकार और लघु कथाकार हैं। वे अपनी माँ के नाम का पहला अक्षर 'श्री' अपने अंतिम नाम के रूप में लेती हैं। गीतांजलि श्री कई लघु कथाओं और पांच उपन्यासों की लेखिका हैं। एक उपन्यासकार और लघु-कथा लेखिका गीतांजलि श्री ने 1987 में अपनी पहली कहानी 'बेल पत्र' लिखी थी। उनके प्रमुख उपन्यास हैं 'माई', 'हमारा शहर उस बरस', 'तिरोहित', 'खाली जगह"। लेखन के अलावा

वह मंच की भी शौकीन रही हैं और 1989 से 'विवादी' नाम के एक रंगमंच से जुड़ी हुई हैं। गीतांजलि श्री ने मंच के लिए भी कई नाटक लिखे हैं। अपने लेखन को लेकर वह कहती हैं कि "हम उसी भाषा में लिखते हैं जिसमें लिख सकते हैं, जिसमें प्रेम करते हैं और जिसके माध्यम से हमें प्रेम मिलता है लेकिन अनुवाद को लेकर कौन लेखक विचार करेगा अगर इससे वह एक बड़े पाठक वर्ग तक पहुंच सकता है।"

बुकर मिलने पर गीतांजलि श्री ने कहा कि - "मुझे कहा गया था कि यह लंदन है, आप हर तरह से तैयार होकर आइएगा। यहां बारिश भी हो सकती है, बर्फ़ भी गिर सकती है, धूप भी खिल सकती है और बुकर भी मिल सकता है। मैं तैयार होकर आयी थी लेकिन शायद मैं अब तक तैयार नहीं हूं। मैं अभिभूत हूं। मैंने कभी बुकर का सपना नहीं देखा था। यह बहुत बड़ी उपलब्धि है, मैं चकित हूं, प्रसन्न हूं और विनम्र हूं। मैं अपनी 95 वर्षीय माँ, पति, परिवार और मित्रों की शुक्रगुज़ार हूँ। यहाँ हम सब के बीच बुकर को लेकर कोई प्रतिद्वंद्विता नहीं है। मुझे पता है कि यह सिर्फ़ नक्षत्रों का एक सुखद संयोग है कि इस मुहुर्त में मुझ पर यह रौशनी पड़ी है और मैं चमक उठी हूँ। यह पुरस्कार सिर्फ़ मेरे लिए व्यक्तिगत तौर पर नहीं है। बल्कि मैं एक भाषा और संस्कृति का प्रतिनिधित्व भी करती हूं। इस पुरस्कार ने हिंदी साहित्य और भारतीय साहित्य को समग्र व्यापक दायरे में ला दिया है। इससे यह भी पता चलता है कि साहित्य की एक ऐसी विशाल दुनिया है जिसे अभी भी खोजा जाना बाक़ी है।"

हम आखर परिवार की ओर से गीतांजलि श्री को बधाई देते हैं और उनसे इसी प्रकार के लेखन की अपेक्षा करते हैं।

"आखर" हिंदी त्रैमासिक ई-पत्रिका का चौथा अंक आज आप सभी सुधि पाठकों के सम्मुख रखते समय इसलिए भी हर्ष का अनुभव हो रहा है कारण हमें **ISSN** नंबर मिल गया है। इसके अलावा 'आखर' ROAD, Research Bible, IIFS (International Impact Factor Services) और Google Scholar में अनुक्रमित (Indexed) हो गया है। इससे हमारी पत्रिका की साख बढ़ी है। इससे 'आखर पत्रिका' में अपने शोधालेख छापने में कई शोधार्थियों, अध्यापकों तथा रचनाकारों को सुविधा हो सकती है। 'आखर' के इस अंक में इस बार प्रस्तुत है शोधालेख, कहानी, कविता और साक्षात्कार आशा है आपको यह अंक पसंद आएगा। आपका स्नेह और सहयोग हमें हमेशा मिलता रहे ताकि हम **'आखर'** के माध्यम से साहित्य की सेवा कर सकें।

इति नमस्कारन्ते!

प्रो. प्रतिभा मुदलियार

(प्रधान संपादिका)